स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव
राज्य स्तरीय कार्यक्रम

ओडिशा

स्वामी चिदानन्द शतवार्षिकी समिति, ओडिशा के तत्त्वावधान में गंजाम जिले की डी एल एस छत्रपुर शाखा तथा डी एल एस बेलागुंठा शाखा ने पाँच दिवसीय युवा शिविर, साधना शिविर तथा आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन क्रमशः दिनांक २२ से २६ दिसम्बर एवं २७ से ३१ दिसम्बर २०१४ तक किया। पूज्य श्री गजपति दिव्य सिंह देव जी महाराज, अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द शतवार्षिकी समिति, ने दोनों स्थानों के कार्यक्रमों की मुख्य अतिथि के रूप में शोभा बढ़ायी एवं भक्तों को अपने सन्देश से आशीर्वादित भी किया।

श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी, श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी, श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी, श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी, श्री स्वामी सदाशिवानन्द जी, श्री स्वामी सनातनानन्द जी तथा अन्य विद्वानों

एवं गणमान्य अतिथियों ने डी एल एस छत्रपुर एवं डी एल एस बेलागुण्ठा के कार्यक्रमों में भाग लिया तथा सभा को सम्बोधित किया। दोनों ही स्थानों में, १००० से अधिक साधक साधना शिविर में सम्मिलित हुए तथा लगभग ५०० विद्यार्थी युवा शिविर में सम्मिलित हुए। श्री जय चन्द्र नायक, महासचिव स्वामी चिदानन्द शतवार्षिकी समिति, ने दोनों स्थानों के कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संयोजन किया।

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में, डी एल एस भुवनेश्वर शाखा ने सितम्बर २०१४ में 'स्वामी चिदानन्द विद्यार्थी चेतना शिविर' नामक एक अद्वितीय कार्यक्रम प्रारम्भ किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शाखा प्रत्येक माह ओडिशा के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिविरों का आयोजन करती है। जनवरी २०१५ में शाखा द्वारा कटक जिले के पाँच विद्यालयों--खण्डासाही जगन्नाथ विद्यापीठ, असुरेश्वर, असुरेश्वर हाइ स्कूल असुरेश्वर, मालीपुर हाइ स्कूल असुरेश्वर, सुन्दर ग्राम बॉयज हाइ स्कूल

एवं सुन्दर ग्राम गर्ल्स हाइ स्कूल, सुन्दर ग्राम में 'स्वामी चिदानन्द विद्यार्थी चेतना शिविर' आयोजित किये गये।

श्री स्वामी श्रीनिवासानन्द जी, श्री प्रभाकर दाश, श्री ए. पी. बिस्वाल, प्रो. श्री क्षिरोदनाथ महापात्र, श्री विरंचि नारायण साहु, श्री नरोत्तम सिंह, श्री प्रभाकर महारणा, श्री ब्रह्मानन्द कर, श्री रमाकान्त मिश्र तथा प्रो. विश्वमोहन पट्टनायक ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। इन पाँच विद्यालयों में प्रतिभागी विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः १५०, ५०, १५०, ८१ तथा ६० थी। समस्त विद्यार्थियों को प्रसाद के साथ तीन ओड़िया पुस्तिकाएँ 'सदाचार हि जीबनर प्राणधार', 'सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य' तथा 'जीबनर सफलता' ज्ञान प्रसाद के रूप में वितरित की गयीं।

डी एल एस भुवनेश्वर शाखा ने 'गोरक्षणी' असुरेश्वर कटक में गो-माता संरक्षण हेतु अपनी सेवाएँ भी अर्पित कीं। शाखा के संन्यासियों एवं भक्तों ने ८० गायों को भोजन कराया तथा उनके एक दिन के भोजन की धनराशि भी भेंट की।

आन्ध्र प्रदेश

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के 'जन्म शताब्दी महोत्सव' के तत्त्वावधान में अखिल आन्ध्रा डिवाइन लाइफ सोसायटी का सम्मेलन २४ से २६ जनवरी २०१५ तक 'घण्टाशाला वेंकटेश्वर राव गवर्मेन्ट म्यूज़िक एण्ड डांस कालेज, विजयवाड़ा' में आयोजित किया गया। डी एल एस मुख्यालय के महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने २४ जनवरी २०१५ को ध्वजारोहण एवं दीपप्रज्वलन द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

सम्मेलन के दैनिक कार्यक्रम में प्रातःकालीन प्रार्थना एवं ध्यान सत्र, नगर संकीर्तन, योगासन, भगवद्गीता एवं विष्णुसहस्रनाम पारायण, उत्कृष्ट सन्तों एवं विद्वानों के प्रवचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मिलित किये गये थे। ध्यान सत्र का संचालन ब्रह्मचारी प्रकाशानन्द जी द्वारा तथा योगासन

कक्षा का संचालन 'गंगा चौला पेंटा' के श्री योगानन्द भारती जी द्वारा किया गया। श्री चिल्ला रामकृष्ण एवं श्री श्रीनुसिद्धान्ती जी ने नगर संकीर्तन का नेतृत्व किया तथा करवाडी की श्रीमती गीतालक्ष्मी जी ने श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण का नेतृत्व किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अन्नामचार्य कीर्तन एवं कुचीपुड़ी नृत्य की प्रस्तुति घंटाशाला

वेंकटेश्वर राव राजकीय संगीत एवं नृत्य महाविद्यालय के विद्यार्थी, श्री शिवानन्द स्कूल करवाडी तथा अरविन्द स्कूल कंचनपल्ली के विद्यार्थियों द्वारा की गयी।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने सम्मेलन के दोनों सत्रों में अपने प्रवचनों द्वारा श्रोताओं को आशीर्वादित किया। श्रीकालाहस्ती के श्री स्वामी विद्यास्वरूपानन्द जी, गांडीपेलम के श्री स्वामी प्रसन्नानन्द गिरी जी, चिन्मयारन्यम येलैपल्ली की माता शीलानन्द जी, पालाकोल्लु की माता ज्योतिर्मयानन्द जी, विजियानगरम के श्री स्वामी समतानन्द जी, विजयवाड़ा के श्री स्वामी सत्यानन्द भारती जी, लेयिदम के श्री स्वामी सत्यानन्द जी और ब्रह्मचारी प्रकाशानन्द जी, तेदिपल्लीगुडम के श्री स्वामी सत्यानन्द गिरी जी, राजामुन्दरी की माता त्यागमयी आनन्द और श्री प्रभासुब्रमन्या, रजोल के श्री जी. कृष्णा, करवाडी के श्री जालेल्ला वारा प्रसाद, पार्लाकिमिदी के श्री पदाला हरिदास गुप्ता, गुदुरु के श्री चदालावाडा वेंकटेशशैया, नादियाल के श्री हयग्रीवाचार्यलु, ताडेपल्ली के श्री एम. टी. अलवार तथा नारायणपुर

ओडिशा के श्री महेन्द्र पटनायक ने सम्मेलन में भाग लेते हुए आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित विषयों पर प्रवचन दिये।

सम्मेलन अत्यन्त भलीभाँति आयोजित किया गया तथा इसमें आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ से लगभग २००० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

छत्तीसगढ़

परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के पावन अवसर के तत्त्वावधान में डी एल एस घाटपद्मुर शाखा ने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। दिनांक ५ से १० दिसम्बर २०१४ तक राज्य की विभिन्न डी एल एस शाखाओं, बस्तर जिले के केन्द्रीय कारागृह, विद्यालयों एवं छात्रावासों तथा दण्डकारण्य वन-क्षेत्र के गाँवों में सत्संग आयोजित किये गये।

६ से ८ जनवरी २०१५ तक एक युवा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें १२१ विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर की गतिविधियों में योगासन, प्राणायाम, प्रार्थना, ध्यान, गीता-पाठ तथा नैतिक शिक्षा एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन एवं शिक्षाओं पर प्रवचन सम्मिलित थे।

शाखा द्वारा १० से १२ जनवरी २०१५ तक 'छत्तीसगढ़ स्टेट डिवाइन लाइफ सोसायटी स्प्रिचुअल कॉन्फरेन्स' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। प्रातःकालीन प्रार्थना एवं ध्यान सत्र, नगर संकीर्तन, योगासन, प्राणायाम, भजन-कीर्तन तथा विख्यात सन्तों एवं विद्वानों द्वारा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दिव्य व्यक्तित्व एवं प्रेरक उपदेशों और अन्य विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन कॉन्फरेन्स के मुख्य कार्यक्रम थे। लगभग १५०० भक्तों ने इस कॉन्फरेन्स में भाग लिया।

मुख्यालय आश्रम में तिरुवाचकम्–पाठ

दक्षिण भारत में पारम्परिक पूजा–उपासना के समय मन्दिर के अधिष्ठातृ देवता को संस्कृत एवं तमिल भाषा में स्तुतियाँ अर्पित की जाती हैं। इन स्तुतियों को 'मराई' अर्थात् दक्षिण के वेद नाम से जाना जाता है। मणिक्कावाचाकार नामक महान् सन्त की एक सुन्दर कृति 'तिरुवाचकम्' इन

स्तुतियों में से एक है। डी एल एस कारीकुडी शाखा तमिलनाडु के श्री एम. अरुणाचलम् अन्य ३५ भक्तों सहित सद्गुरुदेव के पवित्र आश्रम आये तथा परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अपनी श्रद्धापूर्ण भेंट के रूप में २० फरवरी २०१५ को श्री विश्वनाथ मन्दिर में तिरुवाचकम् का पाठ किये। रात्रि सत्संग में, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने वक्तव्य में सभा को संत

माणिक्कावाचाकार के जीवन एवं उनकी महान् कृति 'तिरुवाचकम्' के विषय में बताया तथा डी एल एस कारीकुडी शाखा के भक्तों को सम्मानित भी किया।

परमपिता परमात्मा, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आशीर्वाद सब पर हों!

जिस भाँति साबुन कपड़े की गन्दगी को दूर करता है, उसी भाँति जप का अभ्यास मन के मल को दूर करता है। ***स्वामी शिवानन्द***

हरिद्वार

हरिद्वार में चण्डीघाट पर कुष्ठरोगियों की एक बस्ती है जिसे परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्य स्मृति में 'चिदानन्द कुष्ठ आश्रम' नाम से जाना जाता है। डी एल एस बी. एच. ई. एल. हरिद्वार शाखा कुष्ठाश्रम के अन्तेवासियों को समय-समय पर सेवा-सहायता प्रदान करती है। डी एल एस हरिद्वार शाखा के अनुरोध पर, मुख्यालय आश्रम ने चिदानन्द कुष्ठ आश्रम में सामूहिक रसोईगृह एवं भण्डारगृह के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की।

१४ फरवरी २०१५ को नव-निर्मित रसोईगृह एवं भण्डारगृह का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज उद्घाटन समारोह में

सम्मिलित होने के लिए चिदानन्द कुष्ठ आश्रम गये। विधिवत् उद्घाटन एवं पूजा के पश्चात्, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने नवनिर्मित रसोईगृह एवं भण्डारगृह कुष्ठ आश्रम के अन्तेवासियों को समर्पित किये तथा उन्हें अपने प्रवचन से आशीर्वादित भी किया।

भक्ति तथा प्रेम

भक्ति शब्द मूल 'भज्' धातु से निकला हुआ है, जिसका अर्थ है 'ईश्वर के प्रति अनुराग होना।' ईश्वर के प्रति परम प्रेम ही भक्ति है। यह प्रेम है प्रेम के लिए। भक्त एकमात्र ईश्वर को ही चाहता है। यहाँ स्वार्थपूर्ण आशा नहीं। भक्ति अमृत-स्वरूपा है। ईश्वर के प्रति प्रेम का सहज प्रवाह ही भक्ति है। यह शुद्ध प्रेम है। उत्कृष्ट रस से युक्त शुद्ध उन्नत भाव ही भक्त को ईश्वर से मिलाता है। यह भक्तों के अनुभव की वस्तु है।

भक्ति सभी प्रकार के धार्मिक जीवन का आधार है। भक्ति वासनाओं तथा अहंकार को विनष्ट करती है। भक्ति मन को उच्चतम शिखर तक उन्नत करती है। ज्ञान के प्रकोष्ठों को खोलने के लिए भक्ति ही एकमात्र कुंजी है। भक्ति की परिसमाप्ति ज्ञान में होती है। भक्ति दो से प्रारम्भ होती तथा एक में समाप्त होती है। परा-भक्ति तथा ज्ञान एक ही हैं।

प्रेम से बढ़ कर कोई सद्गुण नहीं। प्रेम से बढ़ कर कोई सम्पत्ति नहीं। प्रेम से बढ़ कर कोई धर्म नहीं; क्योंकि प्रेम सत्य है, प्रेम ईश्वर है। प्रेम तथा भक्ति पर्यायवाची शब्द हैं। यह जगत् प्रेम से उत्पन्न होता है, प्रेम में ही स्थित है तथा अन्ततः यह प्रेम में ही विलीन हो जाता है। ईश्वर प्रेम-स्वरूप है। सृष्टि के हर कण में आप उसके प्रेम को परख सकते हैं।

स्वामी शिवानन्द